गायत्री पाठ संग्रह
पाठ करने योग्य मूल चालीस गायत्रियों
का अनुपम संकलन
उत्तम आश्रम, जोधपुर
उत्तम प्रकाशन की पुस्तकों का—
सूचीपत्र

❀ श्री राम ❀

श्री उत्तम गायत्री पाठ संग्रह

सर्व श्री सिद्धि दायक विविध देवाराधन की मूल विविध चालीस गायत्री पाठ का अभूत फल दाता संग्रह

संकलन कर्ता :

[पिङ्गल रहस्यादि शताधिक्य शास्त्रों के रचयिता]

तत्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशजी महाराज 'अच्युत'

(कवि भूषण, धर्मवारिधि, रामायणाचार्य, विद्यावाचस्पति,)

साहित्य शास्त्री, आचार्य

उत्तम आश्रम

कागा मार्ग, जोधपुर-342 006

प्रकाशक :
स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी महाराज
सञ्चालक : उत्तम आश्रम
(उत्तम साहित्य निधि)
नागौरी गेट के बाहर, जोधपुर-6

प्रसारण :
गुरु दीक्षा पर्वोत्सव के ज्ञान यज्ञ में

ईसवी	बिक्रम	शक:
१९९०	२०४७	१९१२

मुद्रक : एशियन प्रिण्टर्स, जोधपुर

सम्पादकीय श्यामानन लेखनी से—

एक अपनी बात

मानव कल्याण कामना से हम कतिपय विविध मूल देव प्रधान के नाम प्रसरित, मनीषि जनों से मुखरित शास्त्रीय मन्त्रानुष्ठान सिद्ध 'गायत्री' वैदिक छन्दों का पिछले वर्षों से संकलन किया जाता रहा, वैदिक गायत्री के विविध अङ्गन्यास, करन्यास, पुरश्चरण, जप, चिन्तन, भावार्थ, गूढ़ार्थ आदि का अनेकता में एकता सिद्ध उल्लेख कई महाग्रन्थों में जैसे-गायत्री विज्ञान, गायत्री सिद्धि इत्यादि में वृहद रूप से वर्णन हुआ है, विद्वान पाठक जानते हैं. पाठ तो अति शूक्ष्म ही होता हैं, परन्तु विधान, प्रावधान, फलादेश मय फलश्रुति विशाल स्वरूप से प्रखरित होती है। यथा—

कहँ कुंभज कहं सिन्धु अपारा. सोसेऊ सुजस सकल संसारा।
रविमण्डल देखत लघु लागा, उदय तासु त्रिभवन तम भाग...

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे, सकल भुवन अपने वस कीन्है ।
मन्त्र परम लघु जासु वश, विधि हरि हर सुर सर्व ।
महामत्त गजराज कहुं, वस कर अंकुस खर्व ।२५६।

वस्तुतः 'गायत्री' मन्त्रानुष्ठान देखने में छोटा किन्तु विशाल भावार्थ फल भरा भण्डार है।

यथा— बटुक बीज, सन्त शब्द वर अंकुर प्रत्येक विपाक ।
रामप्रकाश ना लघु गनि, तेजवन्त नग नाक ।१।

जैसे कि—अग्नि रोग ऋण राड़, अल्प जाण कीजे जतन ।
बढ़ियों करे बिगाड़, रोक्या रहै ना राजिया ।१।

ऐसे ही —मन्त्र शब्द कण लघु को, अल्प जाण मत मार ।
भाव फल अर्थ बढ़त है, आनन्द जप अपार ।२।

अपने जीवन में गुरु सन्त सज्जनों की सेवा एवं विद्वान गायत्री

पाठी, वैदिक प्रेमियों की सत्संगति से व अध्ययवसायी जनों में ईश्वर कृपा का प्रत्यक्षानुभव किया। उन्हीं अपरोक्षानुभूति उत्तम गायत्रो पाठ संग्रह' को व्यवहारिक जीवन में कार्यान्वित उपयोग के लिये सांसारिक एवं पारमार्थिक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ।

गायत्री गुप्त-साधना को सर्व सुलभ प्रचार में लाने में पाठकों का समय-धन बचाने के लिये सौभाग्य आयु. गुण, यश धनैश्वर्य दायक महा मन्त्र संकलन पाठकों के प्रस्तुत करते हैं, ऐसा प्रयास पूर्व में हमारी लिखी प्रकाशित 'विश्वकर्मा कला दर्शन' में २४ गायत्री मूल पाठ दिया है— जेबी गुटके से यात्रादि में पाठ सुविधा का कारण बना। जापक की इच्छा शक्ति तन्मय होकर सुरति में निरति, शब्द संग मन मिल कर नियति का प्रादुर्भाव प्रभावकारी बनता है।

नवयुवक, विद्वान गायत्री भाव प्रेमी जन पीढि से आशा करता हूँ कि वे प्रत्याप्रत्यक्ष ईश्वरीय तत्वान्वेषण से जीवन-लाभ उठायेंगे तो लेखक/प्रकाशक का भाव-श्रम आभार पूर्ण सफल होगा तथा अशुद्धि सुधार के देव कार्य की अपेक्षा के साथ धन्यवाद !

वेदानुचर :

आचार्य विहार

रविदास जयन्ति, वि. २०४६ **स्वामी रामप्रकाशाचार्य 'अच्युत'**

उत्तम आश्रम, जोधपुर-६

उत्तम गायत्री पाठ संग्रह एक नियमित साधन

(अनुष्ठान-नियम)

१—सूर्योदय से पूर्व ही उठकर स्नान पूजा, संकल्प करने के अवान्तर नित्योपयोगी मन्त्रानुष्ठान जप करें।

२—ब्रह्मचर्य पालना के साथ एक समय सात्विक भोजन करें।

३—साधक का आसन, शयन सदैव साधना-काल में धरातल पर ही हों।

४—यथाशक्ति मौन या सत्यवाणी का संयम, श्रद्धा-विश्वास का अटल निश्चय बने रहे।

५—पाठ में जप करते समय बीच बोलना, कान, घ्राणादि में अंगुली डालना आदि निषेध्र कर्तव्य है।

६—इधर-उधर घूमना आसन पर मना है।

७—लहसन, प्याज, नमक, लाल मिर्च खाने से परहेज करें।

८—यथाशक्ति पीताम्बर (पीत वस्त्र) का प्रयोग रखावें।

९—शौच के बाद स्नान व लघु-शंका पेशाब के बाद गुप्तेन्द्रिय, हाथ-पाँव को धोकर कुल्ला करके बैठना चाहिये।

१०—साधन काल में दूसरों का अन्त या मुफ्त में कोई अन्य की वस्तु ग्रहण नहीं करें एवं न्यायिकवादी प्रतिवादी पर एवं अन्याय घोषित अन्न का प्रयोग न करें।

११—साधन यथा शक्य—कमलगट्टा, रूद्राक्ष, तुलसी, लाल अकीक अथवा स्फटिक मणि कीं मालाओं में से कोई एक ही माला का नित्य प्रयोग करें।

(क) माला, मन्त्र. गुरु, वस्त्रासन मर्यादित एवं अपरिपर्वतनीय सिद्धि दायक होते हैं जो ग्रहण करने से पूर्व शुद्धिकरण विधान का पालन अत्यावश्यक है।

१२—साधक को कुसंग, दुर्व्यशन, मादक-पदार्थ-सेवन, तम्बाकू, गांजा, अमल, शराब, मांसादि का वर्ताव सर्वथा त्याग करने चाहिये।

१३—अनुष्ठान मन्त्राहुति, यज्ञानुष्ठान, हवनसामग्री, घी या तेल दीपक, अगरबत्ती आदि का समयानुसार श्रद्धा-शक्ति से प्रयोग कर सकता है, इसमें कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

१४—साधन काल में साधक का मुख सदैव निश्चित दिशा पूर्व या उत्तर में ही शुद्ध भाव से रहना चाहिये।

१५—यथा सम्भव शंकर, शक्ति, राम, हनुमानादि इष्टदेव के साथ मन्त्रदाता सतगुरु की मूर्ति, चित्रादि को उपासना गृह में स्थापित करके अनुष्ठान करें।

१६—अष्टाङ्ग हवन सामग्री-लाल-श्वेत चन्दन का बुरादा, तिल, जौ, शुद्ध घी, शक्कर, अगर, तगर, कपूर, गुगल, आसापरी, धूप, शुद्ध केसर, कस्तूरी, नागर मोथा, पंचमेवा (पिस्ता, बादाम, किसमिस, अखरोट, काजू) चावल, नारियल चिटका

आदि विविध सुगन्धमय शुद्ध सामग्री से आहुति दी जा सकती है।

१७—आसन सदैव ऊन, कुश या सूती, बाघम्बर, मृगछाल आदि का ही होना चाहिये। काष्ट, पृथ्वी, बांस आदि का उपयोग कदापि नहीं करें।

१८—जप करते समय नवीन या धुले हुए वस्त्र तथा पवित्रता नितान्त आत्यावश्यक है। जहां तक हों बगैर सिलाई के उपयोग के हों तो अत्युत्तम है। फटे हुए या कारी दिये टुकड़े जुड़े, मैले वस्त्र तथा रात के पहनने का तथा दूसरों के पहने हुए आदि को कदापि उपभोग न करें।

१९—पवित्र दशा में स्त्री-पुरुष हिन्दु मात्र (सनातन धर्म वर्गीय) सभी को जप करने का प्रमाणित शास्त्रीय साधिकार प्राप्त

है, केवल अपवित्र, काम क्रोधादि सहित श्रद्धा-विश्वास हीन, अशुद्धोच्चारण कर्ता, गुरु विहीन नुगरे या कृतघ्नी (निगुणे) को न तो अधिकार है और न उन्हें सिद्धि दर्शन ही होता है।

२०—सन्त-महात्माओं द्वारा रचित विविध बाईस रामरक्षाओं का संकलित साधन मन्त्र 'रामरक्षा अनुष्ठान संग्रह' तथा रामायण की छंटी हुई सिद्ध चौपाईयों का संग्रह मानस मन्त्र कर्म विधान अर्थात् 'रामायण मन्त्र उपासना' इच्छा फल दायक अद्वितीय सफल साधना की पुस्तकें भी हमारे यहां उपलब्ध है। साधक मंगवा कर लाभ उठावें।

सतसङ्ग प्राङ्गण
उत्तम आश्रम, जोधपुर-६
अचला सप्तमी, माघ वि. २०४६

रामगुरु सेवक
स्वामी रामप्रकाशाचार्य 'अच्युत'
(साहित्यान्वेषक)

✤ अथ गायत्री पाठ संग्रह ✤

राम गायत्री -ॐ दशरथ नन्दनाय विद्महे सीता वल्लभाय ।
धीम हि तन्नो राम प्रचोदयात् ।१।

सीता गायत्री-ॐ जनक नन्दन्यै विद्महे भूमिजायै ।
धीम हि तन्नो सीता प्रचोदयात् ।२।

लक्ष्मण गाय त्रीं-ॐदशरथ नन्दनायवि हे ऊर्मिलाप्रियाय ।
धीम हि तन्नो लक्ष्मण प्रचोदयात् ।३।

हनुमान गायत्री-ॐ अञ्जनी गर्भाय विद्महे वायु पुत्राय ।
धीम हि तन्नो हनुमत प्रचोदयात् ।४।

कृष्ण गायत्री -ॐ देवकी नन्दनाय विहे वासुदेवाय ।
धीम हि तन्नो कृष्ण प्रचोदयात् ।५।

राधा गायत्री -ॐ वृषभानुजाय विद्महे कृष्ण प्रियाय ।
धीम हि तन्नो राधिका प्रचोदयात् ।६।

ब्रह्म गायत्री-ॐ भूर्भुवःस्वःतत्सवितुर्वरेण्य भर्गोदेवस्य ।
धीम हि धियो योनः प्रचोदयात् ।७।

विष्णु गायत्री-ॐ नारायणाय विद्महे वासूदेवाय ।
धीम हि तन्नो विष्णु प्रचोदयात् ।८।

लक्ष्मी गायत्री-ॐ महालक्ष्मी विद्महे विष्णु प्रियाय ।
धीम हि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ।९।

रूद्र गायत्री -ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय ।
धीम हि तन्नो रूद्र प्रचोदयात् ।१०।

गिरिजा गायत्री-ॐ गिरिजायै विद्महे शिव प्रियाय ।
धीम हि तन्नो पार्वती प्रचोदयात् ।११।

गोपाल गायत्री-ॐ गोपालायविद्महे गोपीजन वल्लभाय ।
धीम हि तन्नो गोपाल प्रचोदयात् ।१२।

गरुड़ गायत्री -ॐविष्णूदूताय विद्महे स्वर्ण पक्षाय ।
धीम हि तन्नो गरुड़ प्रचोदयात् ।१३।

नृसिंह गायत्री-ॐ नृसिंह रूपाय विद्महे वज्र नखाय ।
धीम हि तन्नो नृसिंह प्रचोदयात् ।१४।

दुर्गा गायत्री -ॐ नव दुर्गाय विद्महे सिंहारूढाय ।
धीम हि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ।१५।

सरस्वतीगायत्री-ॐ सरस्वत्यै विद्महे ब्रह्म पुत्रियै ।
धीम हि तन्नो सरस्वती प्रचोदयात् ।१६।

तुलसी गायत्री-ॐ तुलस्यै विद्महे विष्णु प्रियाय ।
धीम हि तन्नो वृन्दा प्रचोदयात् ।१७।

अग्नि गायत्री-ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्नि देवाय ।
धीम हि तन्नो अग्नि प्रचोदयात् ।१८।

रामदेवगायत्री-ॐ अजमल नन्दनाय विद्महे सायर सुताय ।
धीम हि तन्नो रामदेवाय प्रचोदयात् ।१९।

गुरुदेव गायत्री-ॐ ब्रह्मरूपाय विद्महे महा ज्ञानाय ।
धीम हि तन्नो सत गुरु प्रचोदयात् ।२०।

हंस गायत्री-ॐ परम हंसाय विद्महे महा हंसाय ।
धीम हि तन्नो सत हंस प्रचोदयात् ।२१।

अश्विनीगायत्री-ॐ वाणीश्वराय विद्महे हय ग्रीवाय ।
धीम हि तन्नो अश्विनीकुमार प्रचोदयात् ।२२।

गणेश गायत्री- ॐ एक दन्ताय विद्महे वक्र तुण्डाय ।
धीम हि तन्नो गणपति प्रचोदयात् ।२३।

सूर्य गायत्री- ॐ भास्कराय विद्महे कश्यपाय (दिवाकराय) ।
धीम हि तन्नो सूर्य प्रचोदयात ।२४।

नारायण गायत्री-ॐ नारायण विद्महे शेषशायिने ।
धीमहि तन्नो नारायण प्रचोदयात् ।२६।

देवी गायत्री –ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै विद्महे महाशक्त्यै ।
धीमहि तन्नो महादेवी प्रचोदयात् ।२७।

गोपाल गायत्री-ॐगोपीजन वल्लभाय विद्महे वासुदेवाय ।
धीम हि तन्नो गोपाल प्रचोदयात् ।२८।

परशुराम गायत्री–ॐयामदग्न्याय विद्महे महावीराय ।
धीमहि तन्नो परशुराम प्रचोदयात् ।२९।

वृन्दा गायत्री –ॐतुलसी पत्राय विद्महे महालक्ष्म्यै ।
धीम हि तन्नो वृन्दारण्य प्रचोदयात् ।३०।

सतगुरु गायत्री–ॐ परब्रह्मणे विद्महे परमात्मने ।
धीम हि तन्नो सतगुरु प्रचोंदयात् ।३१।

हंस गायत्री –ॐ परम रूपाय विद्महे महतत्वाय ।
धीम हि तन्नो हंस प्रचोदयात् ।३२।

वायु गायत्री –ॐ पवन देवाय विद्महे पञ्चमुखाय ।
धीमहि तन्नो वायु प्राणाय प्रचोदयात्।३३।

विश्वकर्मा गायत्री-ॐ विश्वात्मने विद्महे विश्व रूपाय ।
धीम हि तन्नो त्वष्ठः प्रचोदयात् ।३४।

शेष गायत्री –ॐ दाशरथये विद्महे ऋलवेलाय ।
[illegible] ।३५।

आकाश गायत्री –ॐ आकाशाय विद्महे नभो देवाय ।
धीम हि तन्नो गगनः प्रचोदयात् ।३६।

गङ्गा गायत्री –ॐ गङ्गाये विद्महे विष्णु पाद्यै ।
धीमहि तन्नो भागीरथी प्रचोदयात् ।३७।

जल गायत्री –ॐ जल बिम्बाय विद्महे नील पुरुषाय ।
धीम हि तन्नो अम्बु प्रचोदयात् ।३८।

पृथ्वी गायत्री –ॐ पृथ्वी देव्यै विद्महे सहस्त्र मूर्तये ।
धीमहि तन्नो नारायणी प्रचोदयात्।३९।

चन्द्र गायत्री –ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे अमृत तत्वाय ।
धीम हि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।४०।

रामानन्द गायत्री–ॐ पुण्यसदन्यै विद्महे सुशीला सुताय ।
धीमहि तन्नो रामानन्दाचार्य प्रचोदयात् ।४१।

मानव जीवनोपयोगी सूचि पत्र

✿ ज्ञानवर्द्धक उत्तम साहित्य ✿

"हरिसागर" **(पंचमावृत्ति)**

(समस्त ज्ञानों का भण्डार)

यह पुस्तक योगीराज श्री हरिरामजी महाराज विरचित कविता के अठाईस भागों में विभक्त है. जैसे — (1) गुरुमहिमा (2) अजाणी (3) जाणो (4) गुरु अवस्था (5) गुरु शिष्य सवाद (6) पापो को अंग (8) मूर्ख को अंग (9) भक्त चतुर (10) षट्-दर्शन सार (11) चोदह विद्या (12) राजनीति (13) माया का अंग (14) त्याग (15) पतिव्रता (16) व्यभिचारिणी (17) शील (22) मन (23) चाणक (24) साधु (25) विचार को अंग (26) स्वामी जीयारामजी कृत अनुभूत वाणी (27) कबीरजी और सूखरामजी महाराज के प्रश्नोत्तर (28) अचलरामजी महराज कृत ब्रह्म-प्राप्ति-मार्ग सैलाणी इत्यादि विषयों से विभूषित एवं अन्त में 111 वर्ष का अनुभूत कैलेण्डर तथा कई छन्द भजन भी दिये हैं जो अनुभव का बेजोड़ उदाहरण हैं।

वाणी प्रकाश (छः महात्मा) **(पचमावृत्ति)**

इसमें श्री हरिरामजी, श्री जीयारामजी, श्री सुखरामजी, श्री अचलरामजी, श्री उत्तमरामजी और सन्त रामप्रकाशजी इन छः महात्माओं की वाणियों का विभिन्न राग-रागनियों में संकलन है, जो प्रत्येक सत्संगी पाठक के योग्य हैं। अतः में पिंगल मत का चमत्कार भी दिया है।

अचलराम-भजन-प्रकाश (दशमावृत्ति)

संगीत की इस अद्वितीय पुस्तक में वेद-वेदान्त, गीता, उपनिषद्, योग सांख्य मीमांसा आदि आर्ष ग्रन्थों के सिद्धान्तों का सार भरा है। भक्ति, ज्ञान, पाखण्ड-खण्डन उपदेश आदि मुक्ति के साधनों युक्त वर्णाश्रम धर्म तत्वों को चटकीली राग रागनियों में कूट-कूट भरा है और समस्त राग रागनियों के नाम तथा ताल स्वर स्वर एवं समय प्रत्येक भजन के ऊपर दिये गये हैं और भूमिका में हारमोनियम बजाने-सीखने की विधि भी बतलाई है, जिससे शास्त्रोक्त संगीत का पाठकों को सहज में ही बोध हो सकता है, आठ सचित्रों सहित परिवर्द्धित प्रकाशन है।

उत्तमराम-भजन प्रकाश (द्वितीयावृत्ति)

इसमें ब्रह्म, प्रकृति, मुक्ति-तत्व तथा भक्ति, योग, वैराग्य और सरल भाषा में संगीत की चटकीली राग रागनियों में कूट कूट कर भरा है। समाज शिक्षा राजस्थान सरकार द्वारा सन् 1961 की कविता सूचि में क्रमाङ्क 168 से तहसील वाचनालयों एवं विकास खण्ड पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत आध्यात्मिक पाठ्य पुस्तक जो सगुण निर्गुण के उपासक प्रत्येक सतसंगी के पास रखने योग्य उपादेय चार सौ छन्दों व भजनों का सागर है।

अवधूत-ज्ञान-चिंतामणि (द्वितीयावृत्ति)

इस पुस्तक में साहित्यिक काव्य गुणों से पूरित सैकड़ों छन्द झूलना, इन्दव और भजनों का गहरे अर्थ विवेचना सहित पिंगल योग, वेदान्त ज्ञान का रहस्य भरा है। राजस्थान सरकार-शिक्षा विभाग द्वारा सन् 1961 की काव्य-छन्द सूचि में क्रमाङ्क 196 से प्रादेशिक डिवीजनल एवं जिला पुस्तकालयों के लिए मान्यता प्राप्त है।

भारतीय-समाज-दर्शन (शास्त्री विवेचन)

इस पुस्तक में प्राचीन वैदिक काल से लेकर इस समय तक के हिन्दू धर्म मय सामाजिक वर्ण व्यवस्था शैली के सब सिद्धान्तों और प्राचीन एवं अर्वाचीन शासन व्यवस्था का आलोच्य स्वरूप तथा उससे लाभ एवं हानियों आदि विषयों को कूट-कूट कर अर्थात् इस छोटी सी पुस्तक रूप "गागर" में विशाल हिन्दू धर्म रूपी "सागर" भरा है। अतः यह पुस्तक सब धर्मों-शिक्षाओं की खान और सब ज्ञान का भण्डार है, जो सबके पढ़ने योग्य हैं।

जैसे जीव, मानव की उत्पति कैसे हुई ? समाज का निर्माण कैसे हुआ ? समाज में चार वर्ण क्यों बने ? जातियों की उत्पति कैसे हुई ? हिन्दू धर्म और मुसलमान, पारसी, यहूदी, जैन, बौद्ध, ईसाई इत्यादि धर्मों की उत्पति, स्थान विशेषताओं की संक्षिप्त जानकारी तथा वर्ण आश्रम के शास्त्रीय स्वरूप व अधिकार चयन

को एवं आज के सामाजिक अध्ययन को पक्षपात रहित रोचकता पूर्ण तुलनात्मक - विवेचनीय रहस्य से लिखा है। जिसमे वेद, पुराण, उपनिषद् इतिहास, स्मृत्यादि पांच सौ आर्ष ग्रन्थों के सैकड़ों प्रमाणों, उदाहरणों, टिप्पणियों में प्रचुर सामग्री द्वारा समाज के उत्थान और पतन रूपरेखा का वर्णन किया गया है, जो प्रत्येक समाज प्रेमी मानव के लिए पढ़ने योग्य उपयोगी ग्रन्थ है। शिक्षा विभाग राज्य सरकार द्वारा सन् 1973 के (सामाजिक ज्ञान) सूचि क्रम 494 से सार्वजनिक, प्रादेशिक, जिला तहसील, विद्यालय सभी प्रकार से इस इत्यादि पुस्तकालयों हेतु मान्यता प्राप्त है।

विश्वकर्मा-कला-दर्शन

इस पुस्तक में पूजा, मुहूर्त एवं कला के तीन अनुच्छेदों में विविध प्रकार से शिल्प कला का महत्व, गज के एक एक इन्ची पर प्राकृतिक दैविक अंश कलाओं का निवास, सर्व प्रथम लाभ मुहूर्त से

गज को ग्रहण करने का विधान बताते हुए विश्व की समस्त कलाओं में काम आने वाले 36 औजारों के नाम सहित राज-मिस्त्रियों एवं शिल्प विद्यार्थियों के लिए अत्युपयोगी है। समाज शिक्षा राज्य सरकार द्वारा सन् 1973 की (दर्शन-धर्म-संस्कृति) सूचि क्रम 681 से विविध प्रकार के अनेक पुस्तकालयों, वाचनालयों के लिये मान्यता प्राप्त है।

नशा-खण्डन-दर्पण (सार्वभोम)

आधुनिक प्रचलित व्यसनीय मादक पदार्थं जैसे चाय, तम्बाकू, अफीम, भांग, गाँजा, चरस, कोकोन, दारू इत्यादि सार्वभोम पच्चीस नशों का ऐतिहासिक विवरण हजारों डॉक्टरों, वैद्य, हकीमों तथा धर्म-शास्त्र, पुराण, बाईबिल आदि आर्ष ग्रन्थों के प्रमाणों - उदाहरणों की रोचकता सहित उन्नतिशील गद्य और मौलिक पद्यात्मक प्रवाह में दस्दव, घनाक्षरी दोहादि सैकड़ों छन्दों

में हानि और लाभ के ज्ञान सम्पन्न नशा सीखने के कारण एवं नशा छोड़ने के अचूक उपाय तथा अन्त में वैदिक शिक्षा बत्तीसी पिंगल के गूढ तत्व भी दिये हैं। पुस्तक अनमोल रत्न और अपने पुस्तकालय में रखने योग्य उपादेय है। जिस पर समाज-विशेषज्ञ महानुभावों द्वारा हजारों सम्मतियों का प्राप्त होना एवं नशाबन्दी समितियों द्वारा खरीदना ही हमारी इस पुस्तक की उपयोगिता का प्रदर्शन है।

गूढार्थ-भजन-मंजरी **(द्वितीयावृति)**

अनेक ऐतिहासिक खोज भरे वन्दना के 108 दोहे टिप्पणी सहित देकर पुस्तक को अति उपयोगी बनाई है, जिसे पढ़ते हो एक बार पाठक के मस्तिष्क को साहित्यिक प्रांगण में कसरत करनी पड़ती है।

आदर्श शिक्षा (एकांकी नाटक)

भारतीय पात्रों को रंगमंच पर दिखाकर समाज-सुधार हेतु

पतनकारी-मादक, व्यसन-निरोध जनक शिक्षा तथा अन्त में कई समाज विवेक प्रक्रिया के भजन देकर छोटा मोती बना दिया है। शिक्षा राज्य सरकार द्वारा सन् 1973 के (शिक्षा) सूचि क्रम 668 से सार्वजनिक प्रादेशिक, जिला, तहसील, विद्यालय इत्यादि विविध पुस्तकालयों के लिये मान्यता प्राप्त है।

रामरक्षा-अनुष्ठान संग्रह (तृतीयावृति)

इसमें प्रसिद्ध रामानन्दजी, रामदेवजी, कबीरजी, दादूजी, नानकदेवजी, हरिरामजी, रामदासजी इत्यादि 21 से अधिक सन्त महापुरुषों द्वारा कही गई रामरक्षाओं का संकलन करके साधन-विधि सहित भूत-प्रेत, ग्रह-बाधा. रोग, संकट-निवारण, परीक्षा, नौकरी आजीविका, मुकदमा - विजय आदि धन प्राप्ति की सफलताओं के प्रदाता मन्त्रों को लिखा हैं, जो प्रत्येक साधक के लिये पास रखने में उपयोगी है।

बजरंग पच्चीसा

इसमें त्रिभगी छन्दों द्वारा वीर उपासना की महत्वपूर्ण वन्दना है, जो उपरोक्त रामरक्षा गत सम्पन्न लाभ सुविधाओं से पूर्ण विधि सहित है।

पिंगल रहस्य (छन्द विवेचन)

इस पुस्तक में हिन्दी व्याकरण का शास्त्रीय रूप वर्ण और मात्रा के भिन्न-भिन्न संख्या, सूची, प्रस्तार, नष्ठ, उदिष्ठ मेरू, पताका, मर्कटी आदि के चित्र, शोड्ष कर्म, अंग विस्तार तथा प्रमुख अष्टाङ्गों का सचित्र विपरीतीकरण विभिन्न काव्यालङ्कार, रस-अनुप्रास-भेद, श्लेष, यमकादि तथा कई छन्दों की जातियां, रूपक, उदाहरण-विधि लक्षण एवं पर्यायवाची, बहूवाची, एकार्थ वाची, विलोमादि संज्ञाओं का बाहूल्य-देकर विधेय रीति से नव अनुच्छेदों में लिखा गया है, जो प्रत्येक कविता-भावुक, विद्वान-

विद्यार्थियों के देखने-पढने तथा संग्रह करने योग्य अनुपम पुस्तक है। राजस्थान सरकार समाज शिक्षा द्वारा सन् 1973 के भाषा और व्याकरण सूचि क्रमांक, 24 से कक्षा नो से 11 तक के लिये पाठ्य-क्रम में स्वीकृत है।

अपूर्व लाख वर्षीय कैलेण्डर (पंचमावृति)

एक 12″×12″ इञ्ची साईज के एक मानचित्र में सन् 1 से लेकर ईसवीं से आने वाले एक लाख वर्षों का अर्थात् सृष्टि के अनन्त काल तक के वार, तारीख, महीने एव वर्ष को देखने की सरल विधि, सहित विधान दिया है।

उत्तम बाल ज्योतिष दोहावली (द्वितीयावृति)

इसमें ज्योतिष सम्बन्धी वर्ष विचार, साधारण मुहूर्तों को 670 दोहा, छन्द. चुटकलों में देकर जनता के सुविधा हेतु प्रसार किया गया. जैसे–बिना पंचांग-नक्षत्र, योग या दैनिक चन्द्र निकालने

की विधि, यमघट, सिद्धि, अभिजित योग आदि निकालने के सरल उपाय बताये हैं।

उमाराम अनुभव प्रकाश (पंचमावृति)

इसमें बनानाथजी वैरागी के परम शिष्य अवधूत स्वामी उमारामजी महाराज कृत तथा सुखरामजी, अचलरामजी, उत्तमरामजी एवं रामप्रकाशजी कृत संगीतमय भजन 153 व 371 छन्द का अनूठा संगम है, यह स्वामी अचलरामजी द्वारा मूल संशोधित एवं रामप्रकाशजी द्वारा परिवर्द्धित अनुमार्जित शुद्ध संस्करण है; जिसमें आध्यात्मिक अद्वैतवाद का बेजोड़ दर्शन कराया गया है।

रामप्रकाश शब्दावली (द्वितीयावृति)

प्रस्तुत पुस्तक में आध्यात्मिक समर के विजयीभूत प्रश्न-उत्तर के अनूठे भजन हैं। अन्त में वेदान्तबोध-शब्द संग्रह देकर पुस्तक को प्रत्येक पाठक के उपयोगी बनाया है।

रामप्रकाश शब्द सुधाकर (प्रथमावृत्ति-प्रथम भाग)

इसमें पाखण्ड खण्डन प्राचीन पौराणिक भूगोल, गुरु-भक्ति युक्त नीति पूरित बोध मय भजनों के साथ व्यवहारिक, यौगिक एव आध्यात्मिक संङ्गम में गृहस्थोपयोगी अनूपम हरि ज्ञान गर्भ चेतावनी देकर विशिष्ठ निखार लाया गया है।

अचलोत्तम गुरु ज्ञान गीता (भाषानुवाद)

इसमें महेश्वर पार्वती के संवाद में गुरु महत्व, गुरु शब्दार्थ, अचल उत्तम राम गुरु स्वरूप ज्ञान प्रसाद का श्लोकानुवाद करके सरल भाषा में गुरु तत्व का सगुण-निगुंण विवेचन कहा है।

अन्त्येष्ठि संस्कार दर्पण (शवयात्रा)

इसमें चार सर्गाध्याय कथन करके रोगी की रुग्णावस्था सेवा, [illegible] सनातन नीति का कथन है।

रामप्रकाश भजन माला (चतुर्थावृति)

इसमें आध्यात्मिक विषय पर अनेक राग रागनियों में बने भक्ति मय कुल 117 ज्ञान के भजन है।

सत्यवादी वीर तेजपाल (चतुर्थावृति)

इसमें राजस्थान के प्रसिद्ध वीर तेजाजी के अपूर्व सम्पूर्ण जीवन चरित्र को विस्तार मय सरल भाषा में लिखा है। अन्त में लोक गीत भी है। जिसके समाज शिक्षा राज्य सरकार द्वारा सन् 1973 की (जीवनी) सूचि क्रमाङ्क 44 (जीवनी) से कक्षा 6 से 11 तक के पाठ्य क्रम में स्वीकृति है।

रामदेव ब्रह्म पुराण (बीसवां संस्करण)

रामदेवजी का सम्पूर्ण जीवन चरित्र सागर मेघवाल के घर

जन्म से लेकर समाधि तक एवं उनकी अनूठी सिद्धियों का सरल भाषा में वर्णन है ।

उपासना का अनावरण **(रहस्य की पोल में ढोल)**

रामदेवजी के जीवन सम्बन्धी अजमल के घर पालने में अवतार मानने वाले पाठकों, लेखकों एवं कथा वाचकों से मर्मज्ञ असली प्रश्न ? रामदेव गप्प दर्शन का अनूठा प्रस्तुतीकरण ।

गोरख बोध वाणी संग्रह **(दशमावृति)**

इसमें मच्छंद्रनाथजी का प्रश्नोत्तर श्री दत्तात्रेय स्वामी एवं गोरख संवाद, प्राचीन छन्दों का सरलानुवाद सरल भाषा-टीका में किया गया है, अन्त में कई भजन भी दिये हैं ।

[illegible] अर्थात ग्राम उपचार दर्शन (तृतीयावृति)

[illegible] परीक्षित नुस्खे सैकड़ों रोगों के अनेक घरेलू उपचार, जो आज से सत्तर वर्ष पहले प्रसिद्ध महात्मा देवीदानजी द्वारा संकलित एक "देवीदान अनुभव प्रकाश" पुस्तक छापा था, जिसे पूर्ण रूप से अकारादि क्रम से संशोधित, संकलित एवं परिवर्द्धित नूतन करके अर्थानुकूल नाम से छपाकर तैयार करवाया गया है ।

निर्गुणराम भजनावली

वेदान्त के पाठकों को प्रक्रिया का स्थान, क्रिया, स्वरूप कण्ठस्थ करने हेतु छोटे-छोटे भजन-पदों के 125 निर्गुण रमता राम का चिन्तन करते हुए आध्यात्मिक तत्व को दरशाया है ।

रत्नमाल चिन्तामणि (प्रश्नोत्तरावली) **प्रथम भाग**

इसमें चिन्तनीय अनमोल इच्छा प्रदायक छन्द रत्न जैसे छः सौ प्रश्नों के छः सौ उत्तर तीन सौ दोहों में प्रश्नोत्तरावलि और शिक्षावलि के सौ दोह में करो न करो, भलो न भलो के चार सौ

उपदेश वचन तथा उपदेशमाला. चौरासी बोल आदि पाठ्य सामग्री है। जो प्रत्येक सत्संगी-विद्वान को सभाजीय एवं सुन्दर योग्यता प्रदान करती है।

रामायण मंत्र उपासना **(मानस मंत्र कर्म विधान)**

इसमें रामायण की 108 चौपाईयों/दोहों का मंत्र रूप से संकलन है, जो इच्छा फल दायक अद्वितीय पुस्तक है। पाठ-साधन विधि के 45 नियम सहित जप महात्म्य जान कर साधक अपनी इच्छा पूर्ति कर सकता है।

उत्तम बाल योग रत्नावली **(तीन भाग)**

इसमें उत्तम बाल जिज्ञासुओं के विषय प्रवेशनार्थं संक्षिप्त अष्टांङ्ग कर्मयोग के बालाङ्ग परिचय-प्रणायाम भेद-उपभेद, विधि, स्वरोदय सम्पन्न त्रिधनाडी का सम्पूर्ण स्वरूप ज्ञान, फलसिद्धि रचना

वर्षों के दो कैलेण्डर और अन्त में उपदेश भजन आदि साधक मार्ग दर्शन, साधना का एक स्रोत रूप कर्म, स्वर, ज्योतिष-भजन के तीन योग भाग संकलित है। अन्त में एक स्वरोदय चार्ट भी दिया है।

उत्तमराम अनुभव प्रकाश

इसमें भक्ति वेदान्त-ज्ञान, उपदेश सहित विभिन्न राग-रागनियों में 312 भजनों का अद्वितीय भण्डार है।

आचार्य सुबोध चरितामृत **(सचित्र)**

इस ग्रन्थ में श्री वैष्णव रामस्नेही धर्म गुरु सम्प्रदाय का प्राचीन मूल स्वरूप से आज तक गुरु परम्परा की 118 पीढ़ी-प्रणाली, बावन द्वारा पीठ व्यवहारिक विधान, आध्यात्मिक मान्यताएँ, श्री धाम दर्शन-रामद्वारा (गुरु-पीठ) सूचि, पूर्वज गुरु-जनों के प्रमुख सैकड़ों चित्र-दर्शनों सहित प्रधान सन्त आचार्य महा-

पुरुषों का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक परिचय है नौ सोपानों में रामसम्प्रदाय, रामकथा रामायण, गीता आदि का काल दर्शन विविध उपदेश ग्रंथ और ईश्वरावतार राम मन्दिरों के स्वरूप, पंच संस्कार आदि प्रतिपाद्य सामग्री का अनुपम चयन है ।

श्री साधु-मित्र जनों द्वारा रचित एवं स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी द्वारा सशोधित साहित्य

उत्तम प्रकाशन की कतिपय विशेष पुस्तकें !

रणजीत वेदान्त दोहावली (सन्त रणछारामजी कृत)
रणजीत भजन प्रकाश ,, ,, ,,
रणजीत वाणी प्रेम प्रकाश ,, ,, ,,
रणजीत छन्दावली ,, ,, ,,
ईशरराम वाणी विलास (स्वामी ईसररामजी कृत)
अध्यात्म ज्ञान दुर्बल गीता (सन्त दुर्बलदासजी कृत)

दुर्बलदास बोध विलास (सन्त दुर्बलदासजी कृत)
अद्वैत मलूक वाणी विलास (सन्त मलूकदासजी कृत)
अद्वैत मलूक ज्ञान प्रकाश ,, ,, ,,
शान्ति बोध प्रकाश (सन्त सूरजरामजी कृत)
मुक्ति पथ प्रकाश (सन्त लधारामजी कृत)
भक्ति पद्य रसायन (सन्त मोडारामजी कृत)
उपदेश चेतावनी (सन्त कबीरामजी मौजानन्दी कृत)
कबीर उपदेश दर्पण ,, ,, ,, ,,
भजन सरोवर-वाणी सरोज ,, ,, ,, ,,
दम्पति धर्मोपदेश प्रकाश ,, ,, ,, ,,
उलट बोध प्रकाश ,, ,, ,, ,,
वेदोक्त धर्म प्रचार (नियम प्रकाश) ,, ,, ,, ,,
नवलाराम भजन विलास (सन्त नवलारामजी कृत)

लहरीराम बोध प्रभाकर (सन्त लहरीरामजी कृत)
शङ्करराम बोध प्रकाश (सन्त शकररामजी कृत)
चन्दन चेतन प्रकाश (स्वामी चन्दनशाहजी कृत)
किशोर शब्द रत्नाकर (स्वामी किशोरदासजी 'सूफी' कृत)
निर्मल शब्द विलास (सन्त निर्मलपुरीजी कृत)
भक्ति शब्द दिवाकर (रामस्नेही बीजाराम वेदान्ती कृत)
क्षेत्र क्षेत्रज्ञ पथ प्रदर्शक (सन्त खेतारामजी कृत)
लघु वेदान्त चन्द्रिका (सन्त छोगारामजी कृत)
भवानीराम भजनावली (साधु भवानीरामजी कृत)
चन्द्रोदय बोध प्रकाश (साधु चन्द्रदासजी कृत)
केवल ज्ञान विलास (पण्डित केवलराम कृत)
प्रेम भजनावली (सन्त प्रेमदासजी कृत)
तत्व बोध भजनावली (साधु मोटाराम कृत)

स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी द्वारा रचित पाँडुलिपियाँ

प्रकाशनार्थ उपलब्ध है—प्रतीक्षा कीजिये !

रामप्रकाश भजन प्रभाकर
उत्तमराम वाणी प्रकाश
राम पद्धति विलास
रविदास सूरदास, मीराबाई, कबीर (प्रत्येक की संकलित वाणी)
कृष्ण—अर्जुन युद्ध कथा (पद्यात्मक रचना)
मानव तन रोमावली (ज्योतिष, वैद्यक, वैज्ञानिक, संपुष्टिता)
सत्योपनारायण व्रत कथा (पद्य, गद्य, श्लोक सहित)
शास्त्रीय निबन्ध
सामाजिक एकांकी
अचलोत्तम संवाद रहस्य
उत्तमराम स्वप्न फल दर्शन

रामप्रकाश वेद ज्योति माला (ज्योतिष)

रत्नमाल चिंतामणि (दूसरा, तीसरा भाग)

रामप्रकाश शब्द सुधाकर (दूसरा, तीसरा भाग)

बाहरी सम्पादनार्थ प्रकाशनाधीन कार्य

मोहन ज्ञान भजन माला (रामस्नेही मोहनराम कृत)

पूरण प्रेम शब्दावली (सन्त पूरणप्रकाश एवं प्रेमप्रकाश कृत

हमारी सभी प्रकार की पुस्तकें अपने शहर के प्रतिष्ठित बुकसेलर से मांगिये अथवा अग्रिम 10/- M O. एडवांस भेज कर मँगवाईये।

एक मात्र विश्वसनीय पता—**श्री उत्तम आश्रम**
कागा मार्ग. नागोरी द्वार बाहर, जोधपुर-342 006 (राजस्थान)

अधिकृत विक्रेता—**आर्य ब्रादर्स, बुकसेलर**
पुरानी मण्डी, अजमेर-305 001 (राजस्थान)

हमारी कई पुस्तकें श्री निदेशक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा शिक्षा विभाग, बीकानेर राजस्थान पत्रांक सशि/पु. प्र. 1/36 पुस्तक समीक्षा/73/1 दिनांक 11-1-1974 ई. स्वीकृत पाठ्य-ग्रन्थ सूचि 1073 से विभागीय मान्यता प्राप्त है।

नियम सम्बन्धी सूचनाएँ

1 डाक से वी. पी. मँगाँने वाले सज्जन अपने आर्डर के साथ पांच रु० मनी-आर्डर अवश्य भेजें अन्यथा वी.पी. नहीं भेजी जायेगी।

2 हमारी अन्य कई पाण्डुलिपियों को प्रकाशन करने के लिये प्रकाशकों की आवश्यकता है। अतः इच्छुक प्रकाशक-बुकसेलर गण रॉयल्टी नियम सहित 'पत्र व्यवहार' से सम्पर्क करें।

3 आश्रम को पुस्तकों के लिये हमें लिखने से पहले अपने शहर के प्रतिष्ठित एवं प्रमुख बुक सेलर से मांगिये ताकि आप डाक खर्च से बच सके। वहां नहीं मिलने पर हमें लिखिये।

4 प्रत्येक पुस्तक की 5 प्रति एक साथ मंगवाने या 300) से अधिक मूल्य के माल पर F. O. R. अतिरिक्त दिया जायेगा ।

5 पांच हजार से ऊपर एक साथ माल लेने वालों को 33% बाद दिया जायेगा ।

6 पत्र व्यवहार हिन्दी में स्पष्ट पते सहित जबाबी पत्र के प्रयोग से करें । अपने आर्डर में रेल्वे स्टेशन का नाम व डाकखाना का लेखन जरूर करें ।

7 हमारे द्वारा प्रकाशित एवं भण्डार में उपलब्ध साहित्य ही भेजा जाता है और बाहरी प्रकाशन की कोई पुस्तक नहीं भेजी जायेगी ।

8 आर्डर का माल भेजते समय संशोधित मूल्य को सामयिक रेट से ही प्रमुख माना जायेगा चूँकि मँहगाई के कारण बाजार घटा बढ़ी रहता है ।

धारा १२१ (डी) के अन्तर्गत छपा हुआ साहित्य

बुक पोस्ट

श्रीमान्

प्रेषक—

महन्त-उत्तम आश्रम,

कागा मार्ग, P.O. नागौरी गेट,

जोधपुर-३४२ ००६

मूल्य ३) रुपये